ओ३म्
कृण्वन्तो विश्वमार्यम्
साप्ताहिक
आर्य सन्देश
दिल्ली आर्य प्रतिनिधि सभा का मुखपत्र

परोऽपेहि मनस्पाप।। अथर्व. 6/45/1
ओ मेरे मन के पाप! तू मुझसे दूर भाग जा।
O the vice in my my mind! Leave me and go far away.

वर्ष 37, अंक 32 एक प्रति : 5 रुपये
सोमवार 21 जुलाई, 2014 से रविवार 27 जुलाई, 2014
विक्रमी सम्वत् 2071 सृष्टि सम्वत् 1960853115
दयानन्दाब्द : 190 वार्षिक शुल्क : 250 रुपये पृष्ठ 8
फैक्स : 23365959 ई-मेल :aryasabha@yahoo.com
इंटरनेट पर पढ़ें – www.thearyasamaj.org/aryasandesh

आर्य सांसद डॉ. सत्यपाल सिंह जी का हार्दिक आभार

संसद में गुंजाया महर्षि दयानन्द का सन्देश

सारे देश की आर्य जनता में बेहद उत्साह – प्रभावशाली रूप में किया गया प्रस्तुतिकरण

संसद में डॉ. सत्यपाल सिंह जी द्वारा प्रस्तुत भाषण

कल 22 जुलाई, 2014 को लोक सभा में शून्य काल के दौरान सायंकाल ठीक 6:30 बजे नव निर्वाचित आर्य सांसद डॉ. सत्यपाल सिंह जी ने महर्षि दयानन्द सरस्वती जी के समाज एव राष्ट्रोत्थान हेतु किए गए कार्यों को और अधिक सम्मान देने की मांग करते हुए प्रभावशाली वक्तव्य प्रस्तुत किया जिसका हजारों लोगों ने लोकसभा टीवी पर सीधा प्रसारण देखा। आप सभी आर्यजनों के अवलोनकनार्थ उनका वक्तव्य यहां ज्यों का त्यों प्रस्तुत किया जा रहा है। – **सम्पादक**

माननीय अध्यक्ष महोदय,

स्वतंत्रता संग्राम, और समाज व राष्ट्र के लिए स्वामी दयानन्द सरस्वती द्वारा दिए गये अप्रतिम योगदान को सरकार द्वारा स्वीकार करने और उनके अद्वितीय प्रयासों की सराहना की आवश्यकता है।

देश में 1874 में विदेशी राज्य से मुक्ति का शंखनाद करने वाले स्वामी दयानन्द पहले महापुरुष थे। कांग्रेस से भी 10 वर्ष पूर्व 1875 में उन्होंने आर्यसमाज की स्थापना की – जिसका मुख्य अभियान समाज व राष्ट्र को अज्ञान, अंधविश्वास, पाखण्ड व गुरुडम से मुक्ति, लड़के-लड़कियों के लिये समान संस्कार युक्त अनिवार्य शिक्षा, (हम तो 2010 में Compulsory Education Bill लाये)

डॉ. सत्यपाल सिंह जी, पूर्व पुलिस कमिश्नर हैं और महर्षि दयानन्द के अनन्य भक्त एवं औजस्वी वक्ता हैं। उनसे देश एवं समाज को अनेक आशाएं हैं। सारे देश में हजारों आर्यों ने लोकसभा टीवी पर सीधा प्रसारण देखा एवं डॉ. सत्यपाल सिंह जी को हार्दिक धन्यवाद एवं आभार व्यक्त किया। आप भी अपनी भावनाएं डॉ. सत्यपाल सिंह जी को उनकी ईमेल : Allsatya@gmail.com पर भेज सकते हैं।

– *विनय आर्य, महामन्त्री*

जन्मगत जाति व्यवस्था पर प्रहार कर दलितों व शोषितों को गले लगाकर छुआछूत खत्म करना, नारी शिक्षा व विधवा -विवाह का समर्थन था।

महर्षि दयानन्द पहले महापुरुष थे जिन्होंने इस मिथक का भण्डाफोड़ किया कि बिना अंग्रेजी जाने कोई व्यक्ति

– *शेष पृष्ठ 7 पर*

सार्वदेशिक आर्य प्रतिनिधि सभा के निर्देशन में दिल्ली आर्य प्रतिनिधि सभा द्वारा आयोजित

8वां आर्य परिवार वैवाहिक परिचय सम्मेलन सम्पन्न

संस्कारित जीवन साथी चुनने का उत्तम मंच है आर्य परिवार परिचय सम्मेलन– राजीव आर्य

सम्मेलनों का हो रहा है निरन्तर विस्तार – अर्जुन देव चड्ढा

समान गुण, कर्म और स्वभाव वाले युवक-युवतियों के बीच रिश्ते आर्य मर्यादा की स्थापना का दूरदर्शिता पूर्ण प्रयास है। इससे आर्य विचारधारा वाले परिवारों के बीच मेलजोल से आर्य समाज का विस्तार होगा। भविष्य में इसके अत्युत्तम परिणाम आयेंगे। समान विचार वाले जीवन साथी से विवाह समझौतावादी गृहस्थ जीवन से छुटकारा दिलाता है।

उक्त विचार आठवें आर्य परिवार युवक-युवती परिचय सम्मेलन के उद्घाटन के अवसर पर मुख्य अतिथि अजय सहगल ट्रस्टी टंकारा ट्रस्ट ने व्यक्त किये। उन्होंने कहा कि सार्वदेशिक आर्य प्रतिनिधि सभा के निर्देशन में दिल्ली आर्य प्रतिनिधि सभा द्वारा आयोजित ये परिचय सम्मेलन विचार से विचारों के मेल की साकार परिणिति है। इसके लिए मेरी बहुत शुभकामनाएं हैं तथा अथक परिश्रम के लिए राष्ट्रीय संयोजक अर्जुनदेव चड्ढा तथा उनकी टीम साधुवाद की पात्र हैं।

सम्मेलन के राष्ट्रीय संयोजक अर्जुनदेव चड्ढा ने सम्मेलन की विस्तृत जानकारी देते हुए बताया कि आठवां आर्य युवक-युवती परिचय सम्मेलन कीर्तिनगर आर्य समाज दिल्ली में प्रात: 10 बजे से आयोजित किया जा रहा है। उन्होंने कहा कि इससे पूर्व अब तक सात सम्मेलन जिसमें 6

– *शेष पृष्ठ 5 पर*

सार्वदेशिक आर्य प्रतिनिधि सभा के तत्त्वावधान में गुरुकुल कांगड़ी, हरिद्वार में

तीन दिवसीय कार्यकर्त्ता गोष्ठी एवं साधारण सभा बैठक

29-30-31 अगस्त, 2014

सार्वदेशिक सभा के समस्त साधारण सभा के सदस्यों से अनुरोध है कि उपरोक्त तिथियों को अभी से नोट कर लें तथा अपनी सुविधा के लिए रेलवे आरक्षण आदि अभी से करा लेवें। 28 अगस्त को रात्रि में ही पहुंच जाएं 29 की प्रात:काल गोष्ठी आरम्भ हो जाएगी। प्रान्तीय आर्य प्रतिनिधि सभा के माध्यम से आने वाले नामों को ही भाग लेने की स्वीकृति दी जा सकेगी। कृपया अपने पहुंचने के कार्यक्रम की सूचना सभा कार्यालय को पत्र द्वारा अथवा ईमेल द्वारा अवश्य दें ताकि तद्नुसार उचित व्यवस्था की जा सके।

आचार्य बलदेव	प्रकाश आर्य	डॉ. सुरेन्द्र कुमार
प्रधान, सार्वदेशिक सभा	मन्त्री, सार्वदेशिक सभा	कुलपति, गु. कां, विवि.

सार्वदेशिक सभा के निर्देशन में दिल्ली सभा एवं कश्यप वेद रिसर्च फाउंडेशन के अन्तर्गत

राष्ट्र समृद्धि यज्ञ एवं महाशय धर्मपाल एम.डी.एच. वेद अनुसन्धान केन्द्र का शिलान्यास

शुक्रवार	प्रात:	स्थान: ग्राम ककोड़,
15 अगस्त, 2014	10 से 1 बजे	कोझीकोड (कालीकट)

संस्कार एवं साधना चैनल पर सीधा प्रसारण

पहुंचने वाले कृपया अपने नाम एवं मो. नं. किसी भी कार्यदिवस में दोपहर 12 से 6 बजे के मध्य श्री एस. पी. सिंह जी को मोबाइल नं. 9540040324 पर अंकित करा दें ताकि समुचित व्यवस्था की जा सके।

वेद-स्वाध्याय

उसे हृदय सिंहासन में बिठाओ

- स्वामी देवव्रत सरस्वती

प्र नूनं जातवेदसमश्वं हिनोत वाजिनम्। इदं नो बर्हिरासदे।। ऋ. 10/188/1

अर्थ—हे विद्वानो! आप लोग ***(वाजिनम् अश्वम्)*** ज्ञान बल देने वाले सर्वत्र व्यापक **(जातवेदसम्)** सब उत्पन्न पदार्थों में विद्यमान अथवा उन्हें जानता है, उसे **(नूनम्)** अवश्य ही **(प्रहिनोत)** प्राप्त करो। **(नः)** हमारा **(इदम्)** यह **(बर्हिः)** हृदय-सिंहासन **(आसदे)** उसके बैठने के लिये सुसज्जित है।

किसी शिल्प या मूर्ति को देखने पर मूर्तिकार का कौशल्य सामने दिखाई दे जाता है। ऐसे ही किसी ग्रन्थकर्त्ता के ग्रन्थ का दत्तचित्त होकर अध्ययन करें तो ऐसा विदित होने लगता है कि ग्रन्थ रचयिता मानो पुस्तक में प्रकट हो स्वयं उस विषय का ज्ञान करा रहा है। इसी भाँति किसी सामाजिक नियम के भंग करने पर माता-पिता या गुरु-आचार्य की आकृति मानस पटल पर उभर जाती है, मानो वे इस कार्य का निषेध कर रहे हों।

जिसने इस सृष्टि की रचना की है और इसे चला रहा है, यदि तनिक भी विचार या चिन्तन करें तो अनायास ही किसी अदृश्य सत्ता की ओर ध्यानाकर्षण हो जाता है। यदि किसी नदी, पर्वत, वन, उपवन, समुद्र तट पर शान्त हो उस दृश्य का अवलोकन किया जाये तो उस अद्भुत रचना को देख रचनाकार को साधुवाद देना पड़ता है। पत्ते-पत्ते की कतरन, पक्षियों का कलरव, पवन की सरसराहट, बिजली की चमक, समुद्र का गर्जन, नियम से सूर्य-चन्द्रमा का उदयास्त आदि सभी में किसी अदृश्य शक्ति का आभास होता है जो इन्हें चला रही है। वेद ने उसे जातवेदस् कहा है। जो प्रत्येक पदार्थ को जानती है और उसमें विराजमान हो रही है।

आज विज्ञान प्रकृति के एक-एक रहस्य का उद्घाटन करने में लगा है। नित्य नवीन जानकारी प्राप्त हो रही है परन्तु क्या उसे भी जानने का प्रयास किया गया जिसके जान लेने पर और किसी के जानने की इच्छा शेष नहीं रहती। वेद इसी ओर ध्यानाकर्षण करते हुये कह रहा है—**प्रनूनं जातवेदसमश्वं हिनोत वाजिनम्।** जो प्रत्येक वस्तु में व्याप्त हो रहा है और जिसकी सर्वत्र गति है, उसे अवश्य ही जानो। उपनिषद् भी सावधान कर रही है—

इह चेदवेदीदथ सत्यमस्ति न चेहेह्यवेदीन्महती विनष्टिः। भूतेषु भूतेषु विचिन्त्य धीराः प्रेत्यास्माल्लोकादमृता भवन्ति॥ (केन० २.५)

इस मनुष्य जन्म में परमात्मा को जान लिया तो तुम्हारा जन्म सफल हो गया। यदि उसे नहीं जान पाये तो फिर विनाश ही विनाश है। धीर, योगी लोग संसार की एक-एक वस्तु का चिन्तन करके इस परिणाम पर पहुंचे हैं कि मूलतत्त्व एक परमेश्वर ही है। ऐसे धीर, योगी जन मृत्यु के पश्चात् इस लोक से अमृत, मोक्ष को प्राप्त करते हैं।

ब्रह्म-विज्ञान सब से सूक्ष्म विज्ञान है जिसे जानने के लिये श्रोत्रिय, ब्रह्मनिष्ठ गुरु की शरण में जाना होता है।

सत्येन लभ्भस्तपसा ह्येष आत्मा सम्यग्ज्ञानेन ब्रह्मचर्येण नित्यम्। अन्तःशरीरे ज्योतिर्मयो हि शुभ्रो यं पश्यन्ति यतयः क्षीणदोषाः॥

मुण्डको० ३.५

इस आत्मा को सत्य, तप, सम्यक्-ज्ञान और ब्रह्मचर्य से पाया जा सकता है। शरीर के भीतर ही यह शुभ्र ज्योतिर्मय रूप में विद्यमान है जिसे राग-द्वेषादि दोषों को दूर कर यति लोग देखपाते हैं।

जैसा देखा, जैसा सुना और जैसा अपने मन में हो, उसे वैसा ही कहना, करना और मानना सत्य कहलाता है। **नास्ति सत्यात् परो धर्मः** सत्य से बढ़कर और कोई दूसरा धर्म नहीं है।

योग-साधना करते समय सर्दी-गरमी, भूख-प्यास, मान-अपमान, लाभ-हानि इत्यादि द्वन्द्वों को सहन करना और अपने कर्त्तव्य, धर्म, कर्म से विचलित न होना तप कहलाता है।

ज्ञान-चक्षुओं का खुल जाना ही सम्यक्-ज्ञान है। अपनी ऊर्जा को क्षीण न होने देना और उसे ब्रह्म चिन्तन में लगा देना ही ब्रह्मचर्य है। ये सारे योगदर्शन में कहे यम-नियमों में ही आ जाते हैं। योग का अभ्यास करने से शारीरिक, मानसिक, बौद्धिक दोष क्षीण होने से यति लोग क्षीण-दोष हो अपने अन्तःकरण में जो ज्योतिर्मय=शुभ्र ज्योति प्रकाशित हो रही है, उसका दर्शन करते हैं।

जब किसी अतिथि को घर पर बुलाते हैं तो सर्वप्रथम उसके लिये बैठने का स्थान निश्चित करते हैं और सफाई करके आसन बिछाते हैं अथवा अन्य कुर्सी आदि की व्यवस्था करते हैं। परमात्मा का इस शरीर में दर्शन देने का स्थान हृदय है। परमात्मा तो सभी स्थानों पर विद्यमान है परन्तु आत्मा का निवास स्थान हृदय में होने से वहीं पर वह परमात्मा के दर्शन कर सकता है। मन्त्र कहता है—**इदं नो बर्हिरासदे** यह हमारा हृदय-सिंहासन हमने उसके लिये सजाया है। राग-द्वेष, काम-क्रोध, मोह, ईर्ष्या की झाड़ियों को काट क्षमा से इसे समतल किया है। श्रद्धा का आसन बिछाया है और उसी के आगमन की प्रतीक्षा में बैठे हुये हैं। जैसे सांप पुरानी केचुली को उतार फेंकता है वैसे ही वासनामय शरीर का संशोधन कर उसे योगमय बनाना है। परमात्मा से मिलने का मार्ग बहुत ही सूक्ष्म है जिसे ढूंढते हुये जाना होता है। धीर, योगी लोग उस मार्ग का आश्रय ले अपने गन्तव्य स्थल को प्राप्त कर ही लेते हैं। इस मार्ग के पथिक को भिन्न-भिन्न ज्योतियों के दर्शन होते हैं। कभी कभी पीली, हरी, रक्त वर्ण और अन्त में श्वेत वर्ण वाली ज्योतियाँ प्रकट होती हैं। यह ब्रह्म को प्राप्त करने का ढूंढा हुआ मार्ग है। ब्रह्मज्ञानी, पुण्यकर्मा और तेजस्वी व्यक्ति इसी मार्ग से ब्रह्मलोक को पहुँचता है।

तमेव धीरो विज्ञाय प्रज्ञां कुर्वीत ब्राह्मणः। नानुध्यायाद् बहून् शब्दान् वाचो विग्लापनं हि तदिति॥

बृहदा० ४.२१

धीर और ब्रह्म ज्ञान की जिज्ञासा वाले को उचित है कि इस आत्मतत्त्व को जान अपने को उसके ज्ञान से युक्त करे। बहुत अधिक शब्द जाल में न उलझे क्योंकि आत्मज्ञान के अतिरिक्त अन्य ज्ञान वाणी का थकाना मात्र है।

- ***क्रमशः***

वेद मन्त्र भावार्थ यजुर्वेद 34/36

भग प्रणेतर्भग सत्यराधो भगेमां धियमुदवा ददन्नः। भग प्र णो जनय गोभिरश्वैर्भग प्र नृभिर्नृवन्तः स्याम।।

पदार्थ :- हे (**भग**) परमैश्वर्यवन्! ऐश्वर्य के दाता, संसार व परमार्थ में आप ही हो, तथा हे (**भगप्रणेतः**) आपके ही स्वाधीन सकल ऐश्वर्य है, अन्य किसी के अधीन नहीं। आप जिसको चाहो उसको ऐश्वर्य देओ, सो आप कृपा से हम लोगों का दारिद्रय छेदन करके हमको परमैश्वर्यवाले कर, क्योंकि ऐश्वर के प्रेरक आप ही हो। अथवा हे (**प्रणेतः**) सबके उत्पादक, सत्याचार में प्रेरक, उत्तमता से प्राप्ति कराने वाले और पुरूषार्थ के प्रति प्रेरक! हे (**सत्यराधः**) सत्य ऐश्वर्य की सिद्धि करने वाले तथा जो मोक्ष कहाता है उस सत्य ऐश्वर्य का दाता आप से भिन्न कोई नहीं! अथवा हे (**सत्यराधः**) विद्यमान पदार्थों में उत्तम धन वाले व उसके देने वाले अथवा सत्य प्रकृतिरूप धनयुक्त! हे **(भग)** अत्यन्त सेवा करने योग्य व सत्याचार करने वालों को सकल ऐश्वर्य देने वाले ईश्वर! आप कृपा कर **(नः)** हम लोगों के लिए **(इमाम् धियं ददत् उदव)** इस प्रशंसा युक्त सर्वोत्तम बुद्धि को देते हुए हम लोगों की उत्तमता से रक्षा कीजिये अर्थात् जिस उत्तम बुद्धि से हम लोग आपके गुण और आपकी आज्ञा का अनुष्ठान ज्ञान इन को यथावत् प्राप्त हो अथवा हमकों सत्यबुद्धि, सत्यकर्म और सत्यगुणों को **(उदव)** प्राप्त कर, जिससे हम लोग सूक्ष्म से सूक्ष्म पदार्थों को यथावत् जानें। हे **(भग प्र णो जनय)** सर्व ऐश्वर्योत्पादक! हमारे लिए पूर्ण ऐश्वर्य को अच्छे प्रकार से उत्पन्न कर, सर्वोत्तम गाय, घोड़े और मनुष्य इनसे सहित अत्युत्तम ऐश्वर्य हम को सदा के लिए दीजिए। हे **(भग)** सर्वशक्तिमन्! आपकी कृपा से सब दिन हम लोग (**नृभिः नृवन्तः प्र स्याम**) नायक बहुत वीर श्रेष्ठ मनुष्यों (पुरुष, स्त्री, सन्तान, भृत्यादि) से युक्त अच्छे प्रकार हों। आपसे यह हमारी अधिक प्रार्थना है कि कोई मनुष्य हममें दुष्ट व मूर्ख न रहें, न उत्पन्न हो, जिससे हम लोगों की सर्वत्र सत्कीर्ति हो, निन्दा कभी न हो।(स.वि + आर्याभि. + वेदभाष्य)

भावार्थ (1) :- जो मनुष्य ईश्वर की आज्ञा, प्रार्थना, ध्यान और उपसना का आचरण पहले करके पुरूषार्थ करते हैं वे धर्मात्मा होकर अच्छे सहायवान् हुए सकल ऐश्वर्य को प्राप्त होते हैं।

(ऋ.दया.कृत. ऋग्वेद 7/41/3)

भावार्थ (2) :- मनुष्यों को चाहिये कि जब जब ईश्वर की प्रार्थना तथा विद्वानों का संग करें तब तब बुद्धि की ही प्रार्थना वा श्रेष्ठ पुरुषों की चाहना किया करें।

(ऋ.दया.कृत.यजु. 34/36)

टिप्पणी :- (क) ईश्वर सत्याचार व पुरूषार्थ में प्रेरक हैं अर्थात् जीव को अन्तर्यामी रूप से विद्या-विज्ञान देकर सत्याचार व पुरुषार्थ में रूचि उत्पन्न करने वाले हैं। (ख) प्रकृति, जो कि संसार को बनाने की सामग्री है, ईश्वर की सम्पत्ति है। यह सम्पूर्ण सृष्टि भी ईश्वर का धन है। सत्व, रजस् व तमस् की साम्यावस्था को प्रकृति कहते हैं।

(ग) ईश्वर अत्यन्त सेवा करने के योग्य हैं अर्थात् ईश्वर की अत्यन्त सेवा (आज्ञापालन) करनी चाहिए क्योंकि जितना हित या सुख जीवों का ईश्वर से होता है उतना अन्य किसी से नहीं।

(घ) ईश्वर सत्याचरण करने वालों को सज्जनों को ही अपना ऐश्वर्य प्रदान करते हैं, दुर्जनों को दुष्टाचारण करने वालों को नहीं।

(ङ.) ईश्वर जीवों की अनेक प्रकार से रक्षा करते है उनमें एक प्रकार है- 'सर्वोत्तम बुद्धि या सद्-बुद्धि को प्रदान करके'। सद्-बुद्धि मिलने पर मनुष्य अच्छे कर्मो, अच्छे स्वभावों व अच्छे गुणों को धारण करता है जिससे वह दुःखों से बच जाता है। (च) ईश्वर मनुष्यों से यह चाहते हैं कि वे ऐश्वर्यशाली, पुरूषार्थी, सत्याचारी, विद्वान् बनें व सत्कीर्ति से युक्त हों।

-: संकल्प व संपादनः-
स्वामी ध्रुवदेव परिव्राजक (उपाध्याय)
दर्शन योग महाविद्यालय
आर्यवन, रोजड़, पत्रा.-सागपुर,
जि.-साबरकांठा (गुजरात)- 383307

समसामयिक

तमिल भाषा का संस्कृत से सम्बन्ध

अभी हाल ही में सी.बी.एस.ई. से मान्यता प्राप्त सभी विद्यालयों में 7 से 13 अगस्त तक संस्कृत सप्ताह मनाने का निर्देश केन्द्र सरकार की ओर से जारी किए गए हैं। इसके विरोध में दक्षिण भारतीय राज्य तमिलनाडु में सभी राजनैतिक पार्टियों ने इसके विरोध में आवाज उठाई है। जबकि तमिल का संस्कृत के साथ घनिष्ठ सम्बन्ध है ऐसे में संस्कृत का विरोध कितना उचित है?इसी विचार पर अधारित है डॉ. विवेक आर्य जी का यह लेख प्रस्तत है, जिन्होंने अपने जीवन के छह वर्ष तमिलनाडु में व्यतीत किए हैं और तमिल भाषा से परिचित भी हैं।

आर्यसमाज केन्द्रीय माध्यमिक शिक्षा बोर्ड के इस फैसले का स्वागत करता है।

तमिलनाडु के राजनेता एक बार फिर से सुर्खियों में हैं। कारण केन्द्रीय माध्यमिक शिक्षा बोर्ड द्वारा "संस्कृत सप्ताह" मनाने का निश्चय किया गया तो वहां के विपक्ष के नेता से लेकर मुख्यमंत्री जयललिता तक ने इस आदेश को तमिल भाषियों पर जबरन थोपने के जैसा फैसला बताया। उनका कहना था कि तमिल भाषा एक स्वतन्त्र भाषा है एवं उसका संस्कृत से कोई सम्बन्ध नहीं है। संस्कृत आर्यों की भाषा है जिसे द्रविडों पर थोपा जा रहा है।

वैसे देखा जाए तो तमिलनाडु के नेताओं को जब वहां पर रहने वाले हिंदी भाषी लोगों के वोट चाहिए होते है तब वे हिंदी का प्रयोग करने से पीछे नहीं हटते, मगर जब सुर्खियों में स्थान पाना हो तो 1960 के दशक के पेरियार युग के अंग्रेजों द्वारा थोपी गई विभाजनकारी मानसिकता को पुनर्जीवित करने में उन्हें किसी भी प्रकार से परहेज नहीं है। एक सामान्य शंका मेरे मस्तिष्क में सदा रहती है कि तमिल राजनेता हिंदी-संस्कृत को विदेशी भाषा कहकर विरोध करते है और अंग्रेजी का समर्थन करते हैं। क्या अंग्रेजी भाषा की उत्पत्ति तमिलनाडु के किसी गाँव में हुई थी ? इस शंका के समाधान के लिए हमें तमिलनाडु के इतिहास को जानना होगा।

रोबर्ट कालद्वेल्ल (Robert Caldwell -1814 -1891) के नाम से ईसाई मिश्नरी को इस मतभेद का जनक माना जाता है। रोबर्ट कालद्वेल्ल ने भारत आकर तमिल भाषा पर व्याप्त अधिकार कर किया और उनकी पुस्तक A Comparative Grammar of the Dravidian or South Indian Family of Languages, Harrison: London, 1856 में प्रकाशित हुई थी। इस पुस्तक का उद्देश्य तमिलनाडु का गैर ब्राह्मण जनता को ब्राह्मण विरोधी, संस्कृत विरोधी, हिन्दू विरोधी, वेद विरोधी एवं उत्तर भारतीय विरोधी बनाना था जिससे उन्हें भड़काकर आसानी से ईसाई मत में परिवर्तित किया जा सके और इस कार्य में रोबर्ट कालद्वेल्ल को सफलता भी मिली। पूर्व मुख्यमंत्री करुणानिधि के अनुसार इस पुस्तक में लिखा है कि संस्कृत भाषा के 20 शब्द तमिल भाषा में पहले से ही मिलते हैं जिससे यह सिद्ध होता है कि तमिल भाषा संस्कृत से पहले विद्यमान थी। तमिलनाडु की राजनीती ब्राह्मण और गैर-ब्राह्मण धुरों पर लड़ी जाती रही है। इसीलिए इस पुस्तक को आधार बनाकर हिंदी विरोधी आंदोलन चलाये गए। विडंबना देखिये कि भाई-भाई में भेद डालने वाले रोबर्ट कालद्वेल्ल की मूर्ति को मद्रास के मरीना बीच पर स्थापित किया गया है एवं उसकी स्मृति में इसी वर्ष डाक टिकट भी जारी किया गया है।

जहाँ तक तमिल और संस्कृत भाषा में सम्बन्ध का प्रश्न है तो संस्कृत और तमिल में वैसा ही सम्बन्ध है जैसा संस्कृत और विश्व की अन्य भाषाओं का है। संस्कृत जैसे विश्व की अन्य भाषाओं की जननी है वैसे ही तमिल की भी जननी है। क्योंकि न केवल आधुनिक तमिल ग्रंथों में, प्रत्युत पुरातन ग्रंथों में जो तमिल कविताएं पाई जाती हैं उनमें बहुत से संस्कृत के शब्द प्रयुक्त किये गए हैं। तमिल की बोलचाल की भाषा तो संस्कत-शब्दों से भरी पड़ी है। कम्ब रामायण में भी अपभ्रंश रूप से अनेक संस्कृत शब्द मिल जायेंगे। तमिल भाषा की लिपि में अक्षर कम होने के कारण संस्कृत के शब्द स्पष्ट रूप से नहीं लिखे जाते। इसलिए अलग लिपि बन गई।

'तमिल स्वयं शिक्षक' से तमिल-संस्कृत, हिंदी के कुछ शब्दों में समानता देखी जा सकती है-

	तमिल	संस्कृत	हिंदी
1.	वार्ते	वार्ता	बात
2.	ग्रामम्	ग्रामः	गांव
3.	जलम्	जलम्	जल
4.	दूरम्	दूरम्	दूर
5.	मात्रम्	मात्रम्	मात्र
6.	शीग्रम	शीघ्रम	शीघ्र
7.	समाचारम	समाचारः	समाचार

इस प्रकार के अनेक उदहारण तमिल, संस्कतृ और हिंदी में 'तमिल स्वयं शिक्षक' से समानता के दिए जा सकते हैं। इसी प्रकार से 'तमिल लैक्सिकान' के नाम से तमिल के प्रामाणिक कोष को देखने से भी यही ज्ञात होता हैं की तमिल भाषा में संस्कृत के अनेक शब्द विद्यमान हैं। तमिल वेद के नाम से प्रसिद्ध त्रिक्कुरल, संत तिरुवल्लुवर द्वारा प्रणीत ग्रन्थ के हिंदी संस्करण की भूमिका में माननीय चक्रवर्ती राजगोपालाचारी लिखते हैं कि 'इस पुस्तक को पढ़कर उत्तर भारतवासी जानेंगे कि उत्तरी सभ्यता और संस्कृति का तमिल जाति से कितना घनिष्ठ सम्बन्ध और तादात्म्य हैं'। इस ग्रन्थ में अनेक वाक्य वेदों के उपदेश का स्पष्ट अनुवाद प्रतीत होते हैं। इस लेख का विषय अत्यंत गंभीर परन्तु शुष्क है इसलिए विस्तार भय से संक्षिप्त ही देने का प्रयास किया है। इस विषय पर अधिक प्रकाश के लिए पंडित धर्मदेव विद्यामार्तंड द्वारा रचित वेदों का यथार्थ स्वरुप, Sanskrit -The Mother of all World Languages जैसी पुस्तकों को पढ़ना चाहिए। संस्कृत को विश्व की समस्त भाषाओं की जननी सिद्ध करने के लिए पंडित जी द्वारा आरम्भ किये कार्य को आगे बढ़ाने की आवश्यकता है। फूट डालो और राज करो की विभाजनकारी मानसिकता का प्रतिउत्तर सम्पूर्ण देश को हिन्दी भाषा के सूत्र से जोड़ना ही है और यही स्वामी दयानन्द की मनोकामना थी। आर्यसमाज को भाषा वैज्ञानिकों की सहायता से रोबर्ट कालद्वेल्ल की पुस्तक की तर्कपूर्ण समीक्षा छपवाकर उसे तमिलनाडु में प्रचारित करवाना चाहिए। ऐसा मेरा व्यक्तिगत मानना है।

- डॉ. विवेक आर्य

दिल्ली सभा द्वारा संस्कृत प्रचार की दिशा में महत्त्वपूर्ण कदम

आर्यसमाज आनन्द विहार एल ब्लाक हरि नगर, नई दिल्ली के सहयोग से

गुरु विरजानन्द संस्कृतकुलम् का संचालन

केवल और केवल संस्कृत के प्रचार प्रसार की दृष्टि से एवं संस्कृत के विद्वानों को तैयार करने के लिए यह लघु गुरुकुल कार्यरत है। इसमें केवल 10 ब्रह्मचारियों को ही प्रवेश दिया गया है, जिसकी सम्पूर्ण दिनचर्या केवल संस्कृत को समर्पित है। दिल्ली आर्य प्रतिनिधि सभा द्वारा आर्यसमाज एल ब्लाक आनन्द विहार, हरि नगर में संचालित यह संस्थान आचार्य धनञ्जय शास्त्री के आचार्यत्व में कार्य कर रहा है। आपसे निवेदन है कि आप गुरुकुल एवं संस्कृत की उन्नति हेतु अपना आर्थिक सहयोग अवश्य दें। आप गुरुकुल को दैनिक आवश्यकताओं की वस्तुएं भी प्रदान कर सकते हैं। आप अपना सहयोग **'दिल्ली आर्य प्रतिनिधि सभा-गुरु विरजानन्द संस्कृतकुलम्'** के नाम चैक/बैंक ड्राफ्ट भेजकर कर सकते हैं। आप मासिक रूप से भी सहयोग प्रदान कर सकते हैं। **सभा को दिया गया दान आयकर की धारा 80जी के अन्तर्गत आयकर मुक्त है।**

- विनय आर्य, महामन्त्री

आध्यात्म चिन्तन

ऋग् वेद यह कहता है कि सत्पथगामी के लिए सत्य बोलना और सत्कर्म करना कितना अनिवार्य है। **नास्ति सत्यात् सपरोधर्मः** अर्थात् सत्य में उत्तम कोई धर्म नही है। मनु महाराज जी ने उचित ही कहा है, हमारे किसी भी कथन की सार्थकता तब है, जब हमारे कर्म हमारी वाणी के अनुरूप हो। ईश्वर भक्त को भक्ति के साथ सत्कर्म करने वाला होना चाहिए, तभी ईश्वर भक्ति कहलायेगी। प्रभु का निरन्तर ध्यान से स्वच्छ हृदय होने लगता है और मनुष्य जगत में सर्वत्र परमात्मा का आभास करने लगता है।

जब कोई मन, वचन, कर्म से एक रूप हो जाता है तो वह देवत्व की ओर बढने लगता है, तब वह मानव कल्याण की बात करने लगता है। जब हम **मनसा वाचा कर्मणः** एक रूप होंगे तो हमारी आत्मा की सर्व भूतहित के लिये ईश्वर से प्रार्थना कर बैठेगी। **सर्वे भवन्तु सुखिनः सर्वे सन्तु निरामयाः**। यह जगत तपोभूमि भी है। वेदों में इसीलिये प्रार्थना की गई है कि मेरे प्रवृति मधुमय हो, मेरी निवृति भी मधुमय हो, इसका तात्पर्य यही है कि यदि सत्यं शिवं सुन्दरम् की भावना हमारे मन में हो और मनसा, वाचा, कर्मणा से एक रूप होने से सफलता मिल सकती है।

मानव जीवन के अन्तःकरण की वृति तीन कोटि की होती है, सत्विक, राजसी और तामसी। सात्विकी भावना ईश्वरपरक आत्मा की कल्याणकारी है। राजसी जगत के विषय भोगों की भावना है। हिंसापरक अज्ञानता से परिपूर्ण तामसी भावना है और सात्विक भावना जगत के बन्धनों से छुड़ाती है। वहाँ अन्य दोनो दुःखों में बांधने वाली है। स्वभाव के अनुसार भावना, भावनानुसार इच्छा, इच्छानुसार कर्म, कर्मानुसार स्वभाव के आधार पर पुनः भावना निर्मित होती है और बुरी भावना कर्म विनष्ट होकर ही अन्तःकरण पवित्र करके परमात्मा में जोड़ती है। यह सत्य है कि कुसंग का प्रभाव बिना कोई प्रयास किये तुरन्त ही पड़ता है और सत्य संग का प्रभाव देर में पड़ता है। चित्त की चंचलता, हृदय की मलिनता, अकर्मण्यता, आलस्य का प्रतिकूल स्वभाव के कारण सत्पुरूषों का व्यक्तित्व देर से प्रभावित होता है।

जिस दिन ईश्वर, संसार, आत्मा और मानव शरीर के संबंधों की गरिमा का ज्ञान होगा, उस दिन हमें जीवन की वास्तविकता का ज्ञान हो जायेगा। प्रत्येक व्यक्ति अपने जीवन में सुख शन्ति व समृद्धि चाहता है। परन्तु बदले में समाज व राष्ट्र को क्या देता है, विचारणीय है। ईश्वर, संसार, आत्मा और मानव शरीर का आपस में अन्योन्याश्रित संबंध है। एक के बिना दुसरे की गणना नहीं की जा सकती है। इसलिये हमें ईश्वर, आत्मा, शरीर व समाज के साथ सामन्जस्य बनाना पड़ता है।

प्रायः हमारी सारी उम्र खाने-पीने व परिवार के पालने में ही निकल जाती है और जब आत्म बोध होता है तब यह शरीर व दिलोदिमाग साथ नहीं दे पाता है। तब बहुत देर हो चुकी होती है। इसके लिए सतत प्रभु स्मरण सेवा भाव संयम सदाचार आदि ऐसे सद्गुण हैं, जो हमें आत्मबोध के मार्ग पर ले जाते हैं। सद्गुण प्रत्येक स्थिति में मनुष्य का कल्याण करते हैं।

माता-पिता का बच्चों का पालन-

- शेष पृष्ठ 7 पर

अन्तर्राष्ट्रीय आर्य महासम्मेलन सिंगापुर-बैंकॉक - 2014 : एक निमन्त्रण

आर्यजन अधिकाधिक संख्या में पहुंचकर सम्मेलन को स्मरणीय बनाने में सहयोग करें

मान्यवर महोदय, सादर नमस्ते! आप सब आर्यसमाज व इसके कार्यो से सर्वथा परिचित ही हैं। वर्तमान युग के विख्यात समाज सुधारक वेदों के प्रकाण्ड विद्वान, महर्षि दयानन्द सरस्वती जी ने परमपिता द्वारा प्रदत्त वेद वाणी के प्रचारार्थ एवं मानव कल्याणार्थ आर्यसमाज की स्थापना 1875 में की थी। आर्यसमाज की स्थापना तो मुम्बई में हुई, किन्तु शीघ्र ही यह उत्तर भारत और आहिस्ता-आहिस्ता सारे भारत और लगभग विश्व के 34 देशों में विस्तारित हो गया। लगभग 140 वर्षो से आर्यसमाज की विश्वभर में फैली शाखाएं मानव कल्याण के कार्यों में ईश्वराज्ञा से संलग्न हैं। आर्यसमाज के इस विश्वव्यापी संगठन में और मजबूती आ सके तथा हम और तीव्र गति से अपने विश्व कल्याण के उद्देश्य को लेकर आगे बढ़ सकें इसके लिये समय-समय पर आपसी विचार-विमर्श बहुत आवश्यक है। इसी उद्देश्य को ध्यान में रखकर सार्वदेशिक सभा ने आर्य महासम्मेलनों की अंतर्राष्ट्रीय श्रृंखला आरम्भ की थी। इस कड़ी में गत 10 वर्षों में भारत, अमेरिका, मॉरीशस, सूरीनाम, हॉलैंड तथा द.अफ्रिका में ये सम्मेलन सम्पन्न हुए हैं जिनमें आपको भी भाग लेने का सौभाग्य अवश्य ही प्राप्त हुआ होगा। सम्मेलनों की इस श्रृंखला में इस वर्ष का सम्मेलन सिंगापुर और थाईलैंड की राजधानी बैंकॉक में संयुक्त रूप से आयोजित किया जा रहा है जिसमें अनेक देशों से आर्यसमाज के प्रतिनिधि भाग लेंगे। इन दोनों ही देशों मे लगभग 70-80 वर्ष पूर्व आर्यसमाज की स्थापना हो चुकी थी तथा आज भी वे मानव कल्याण के कार्य में सक्रियता से जुटे हुए हैं। इन सम्मेलनों के आयोजन से वहाँ के स्थानीय संगठनों को तो मजबूती प्राप्त होती ही है हम सबको भी उन देशों की परिस्थितियों के अनुसार कार्य कर रहे इन संगठनों को देखने और इनके कार्यकर्ताओं से मिलने का अवसर मिलता है। अत: हमारा आपसे निवेदन है कि आप 1 व 2 नवम्बर को सिंगापुर में तथा 8 व 9 नवम्बर को बैंकॉक में होने वाले सम्मेलन में अवश्य ही भाग लेवें। अधिकतर आर्य महानुभावों की यह इच्छा रहती है कि सम्मेलन के साथ-साथ उन देशों के स्थानों का भी भ्रमण किया जाए। अत: सभा ने दोनों देशों की यात्रा का कार्यक्रम भी साथ में बनाया है। जो आर्य महानुभाव इन यात्राओं का लाभ लेना चाहते हैं उनके लिए पूर्ण विवरण एवं आवेदन-पत्र नीचे दिया जा रहा है। आवेदन पत्र www.thearyasamaj.org से भी डाउनलोड किया जा सकता है।- **अग्रवाल सुरेशचन्द्र आर्य, यात्रा संयोजक एवं उपप्रधान सार्वदेशिक सभा**

अन्तर्राष्ट्रीय आर्य महासम्मेलन सिंगापुर-थाईलैंड-2014

सिंगापुर 1 -2 नवम्बर एवं बैंकाक 8 -9 नवम्बर 2014

सम्माननीय आर्यबन्धुओ! आपको यह सूचित करते हुए हर्ष हो रहा है कि सार्वदेशिक आर्य प्रतिनिधि सभा दिल्ली के तत्त्वावधान में इस वर्ष अन्तर्राष्ट्रीय आर्य महासम्मेलन 1 तथा 2 नवम्बर 2014 को सिंगापुर में तथा 8 और 9 नवम्बर 2014 को थाईलैंड की राजधानी बैंकॉक में सम्पन्न होने जा रहा है। इस सम्मेलन में सम्मिलित होने के लिये अनेक देशों के प्रतिनिधि सिंगापुर तथा बैंकाक पहुँचेंगे। भारतवर्ष से भी इस सम्मेलन में भाग लेने हेतु बड़ी संख्या में आर्यजनो के पहुँचने की सम्भावना है।

सभी इच्छुक आर्यजन जो इस सम्मेलन में भाग लेने हेतु जाना चाहते हैं वे सार्वदेशिक आर्य प्रतिनिधि सभा दिल्ली के माध्यम से ही भाग ले सकेंगे। सार्वदेशिक सभा के द्वारा स्वीकृत सदस्यों को ही सिंगापुर तथा थाईलैंड की प्रतिनिधि सभाएं अपने यहाँ प्रतिनिधि के रूप में स्वीकार कर उनकी व्यवस्था करेंगी।

अनेकों आर्यजन इस अवसर पर दक्षिण पूर्व एशिया महाद्वीप का भ्रमण भी करना चाहते है, इसलिये उनकी भावनाओं को ध्यान में रखते हुए सिंगापुर तथा थाईलैंड के अत्यन्त रमणीय एवं महत्त्वपूर्ण स्थानों की यात्रा का भी रोचक कार्यक्रम बनाया गया है जो निम्न प्रकार है :

भव्य सिंगापुर-थाईलैंड यात्रा (11 रात्रि 12 दिन) : 30 अक्टूबर से 11 नवम्बर

प्रस्थान : 30 अक्टूबर की रात्रि को दिल्ली से /मुंबई से सिंगापुर के लिये प्रस्थान

वापिसी : दिनांक 11 अक्टूबर 2014 को बैंकाक से भारत के लिये वापिसी

-: कार्यक्रम:-

31 अक्टूबर से 4 नवम्बर	**सिंगापुर (5 रात्रि)**
5 नवम्बर से 6 नवम्बर 2014	**पटाया (2 रात्रि)**
7 नवम्बर से 10 नवम्बर 2014	**बैंकाक (4 रात्रि)**
11 नवम्बर 2014	**भारत वापिसी**

सिंगापुर में आर्य महासम्मेलन 1 तथा 2 नवम्बर 2014 को है तथा बैंकाक में 8 तथा 9 नवम्बर 2014 को है। बाकी सभी दिनों में सिंगापुर, पटाया तथा बैंकाक के सभी विश्व प्रसिद्ध दर्शनीय स्थलों को दिखाया जायेगा। **इस यात्रा की कुल व्यय राशि प्रति व्यक्ति रुपये 98,500/- निश्चित की गई है** जिसमें हवाईजहाज की अंतर्राष्ट्रीय टिकटें, वीजा, इन्श्योरेन्स, सभी स्थानों पर आने-जाने की वाहन व्यवस्था, नाश्ता, दोनो समय का भोजन, होटल व्यय, सभी स्थानों के प्रवेश टिकट, मिनरल वाटर, टिप्स आदि के सभी खर्चे शामिल हैं।

सुपर स्टार जैमिनी शिप द्वारा अत्यन्त रोमांचक क्रूज यात्रा

(2 रात तथा 3 दिन की समुद्री सैर)

2 रात तथा 3 दिन की इस समुद्री यात्रा को आप कभी भी भुला नहीं पायेंगे। सुपर स्टार जैमिनी क्रूज में आपको रोमांचित तथा प्रफुल्लित कर देने वाले ऐसे अनेकों कार्यक्रम मिलेंगे जो आपको 24 घंटे व्यस्त रखेंगें। सुबह से लेकर रात तक नि:शुल्क खाना-पीना और घूमना-फिरना आपको हमेशा याद रहेगा। **इस क्रूज यात्रा के लिए आपकी दिल्ली/मुंबई से 28 अक्टूबर 2014 की रात्रि को प्रस्थान करना होगा।**

क्रूज यात्रा का अतिरिक्त व्यय रु. 21000/- प्रति यात्री होगा

सिंगापुर से प्रस्थान : 29 अक्टूबर 2014 की शाम को

वापसी : 31 अक्टूबर 2014 को दोपहर में

नोट : दीपावली सीजन के कारण स्टार क्रूज के लिये केवल 50 केबिन (sea view) ही उपलब्ध हो पायी हैं। अत: जिन 100 यात्रियों (50×2) की स्वीकृति एडवांस के साथ सर्व प्रथम प्राप्त हो जाएगी उन्हें ही इस क्रूज-यात्रा में से जाना सम्भव हो सकेगा।

अत: निवेदन है कि जिन यात्रियों को क्रूज यात्रा भी करनी है उन्हें प्रतियात्री रु. 98,500 + 21000 = **1,19,500/-** रुपये का भुगतान करना है तथा जिन्हें क्रूज यात्रा नहीं करनी है उन्हें प्रतियात्री केवल रु. 98,500/- का भुगतान करना है।

क्रूज में शामिल होने वाले यात्री कृपया इस पत्र के प्राप्त होते ही बुकिंग राशि **रु.65,000/-** का बैंक ड्राफ्ट **COX & KINGS LTD.** के नाम **Payable at Mumbai** 25 जुलाई 2014 तक निम्न पते पर भेज दें।

इसी प्रकार क्रूज यात्रा में शामिल न होने वाले यात्री कृपया **55,000/-**की बुकिंग राशि का बैंक ड्राफ्ट **COX & KINGS LTD.** के नाम **Payable at Mumbai** 25 जुलाई 2014 तक निम्न पते पर भेज दें।

शेष राशि का भुगतान (क्रूज वालों के लिये रु. 54,500/- तथा क्रूज में **न जाने वालों के लिये रु. 43,500/-**) 31 अगस्त 2014 तक निम्न पते पर भेजना अनिवार्य होगा।

- अग्रवाल सुरेशचन्द्र आर्य,
यात्रा संयोजक - अंतर्राष्ट्रीय आर्य महासम्मेलन-2014
12, रॉयल क्रीसैन्ट, थलतेज, अहमदाबाद- 380059
मो. 9824072509 निवास : 079-26858338

अन्तर्राष्ट्रीय आर्य महासम्मेलन सिंगापुर-थाईलैंड-2014 : कुछ आवश्यक सूचनाएं

(अ) सभी यात्रियों को एडवांस राशि के साथ पासपोर्ट के प्रथम दो पृष्ठ तथा अन्तिम दो पृष्ठों की जेरोक्स कापी अवश्य भेजनी है। संलग्न आवेदन-पत्र पर सम्बन्धित आर्यसमाज के पदाधिकारियों की अनुमति/स्वीकृति आवश्यक है। एडवांस राशि प्राप्त होने के बाद **COX & KINGS LTD** द्वारा आपको वीजा सम्बन्धी तथा अन्य सभी सूचनाऐं भेज दी जायेंगी।

(ब) सार्वदेशिक सभा द्वारा इस यात्रा हेतु 5 सदस्यों की एक समिति गठित ही गई है जिसके संयोजक श्री अग्रवाल सुरेशचन्द्र आर्य, उपप्रधान-सार्वदेशिक आर्य प्रतिनिधि सभा है। अन्य सदस्य श्री प्रकाशजी आर्य,मंत्री, सार्वदेशिक सभा, श्री राजसिंहजी आर्य, प्रधान, दिल्ली सभा, श्री धर्मपालजी आर्य-वरिष्ठ उपप्रधान, दिल्ली सभा तथा श्री विनय आर्य-महामंत्री, दिल्ली सभा हैं।

(स) यात्रा खर्च में 70 वर्ष तक के यात्रियों का बीमा खर्च शामिल है। 70 वर्ष से अधिक आयु वाले यात्री को अतिरिक्त बीमा खर्च ट्रेवल कं. को देना होगा अथवा उस यात्री को अपना बीमा स्वयं कराना होगा।

(द) यह यात्रा विश्व विख्यात ट्रैवल एजेन्सी **COX & KINGS LTD** द्वारा आयोजित की गई है। हमें पूर्ण विश्वास है कि आपकी यात्रा अत्यन्त सुखद, आरामदायक एवं रोमांचक रहेगी।

विशेष: (1) ऊपर दर्शायी गई यात्रा-व्यय राशि का पूर्ण भुगतान 31/08/2014 तक करना आवश्यक होगा।

(2) सिंगापुर तथा थाईलैंड के लिये प्राय: प्रत्येक यात्री को वीजा मिला जाता है लेकिन दुर्भाग्यवश किन्ही विशेष कारणों से यदि किसी यात्री को वीजा नहीं मिलता है तो वीजा चार्जेज तथा एअर टिकिट के कैन्सीलेशन चार्जेज (नियमानुसार) को कम करके ही शेष राशि यात्री को लौटाई जायेगी।

(3) ध्यान रहे कि इस यात्रा के लिये आपके पासपोर्ट की वैधता (Validity) 15/05/2015 तक होनी आवश्यक है।

(4) यात्रा की बुकिंग होने के पश्चात् यदि किसी यात्री का कार्यक्रम असाधारण परिस्थिति में अथवा विशेष आकस्मिक परिस्थिति में स्थगित होता है तो उसे उसका पैसा जिन नियमों के अन्तर्गत वापस किया जायेगा, वे सभी नियम शीघ्र ही अलग से ईमेल अथवा मैसेज द्वारा सभी यात्रियों को भेज दिये जायेंगे।

कृपया उपरोक्त बातों को ध्यान में रखकर ही आवेदन पत्र व राशि भेजें ताकि बाद में अकारण कोई विवाद न हो। यात्रा सम्बन्धी अन्य जानकारी हेतु आप मुझसे (प्रकाश आर्य) तथा निम्नलिखित महानुभावों से सम्पर्क कर सकते है :-

1. श्री अग्रवाल सुरेशचन्द्र आर्य मो. 9824072509
2. ब्र. राजसिंह आर्य मो. 9350077858
3. श्री विनय आर्य मो. 9958174441

एक अद्वितीय अन्तर्राष्ट्रीय आर्य महासम्मेलन 2014 तथा अविस्मरणीय सिंगापुर तथा बैंकाक की यात्रा की आशा और विश्वास के साथ - आपका

प्रकाश आर्य, मन्त्री, सार्वदेशिक आर्य प्रतिनिधि सभा, नई दिल्ली
मो. 09826655117

आवेदन पत्र का प्रारुप इस आर्य सन्देश के पृष्ठ 6 पर दिया गया है। यह आवेदन पत्र www.thearyasamaj.org से भी डाउनलोड किया जा सकता है।

प्रथम पृष्ठ का शेष

दिल्ली में तथा एक सम्मेलन इंदौर में सम्पन्न हुआ है जिनमें लगभग 375 रिश्ते आर्य परिवारों में हुए हैं। आर्य समाज का यह कार्यक्रम कठिन समस्या का एक समाधान है।

कार्यक्रम का शुभारम्भ अतिथियों अजय सहगल, राजीव आर्य, अरुण प्रकाश वर्मा, समाजसेवी प्रेम अरोड़ा, रवि चड्ढा, ओम प्रकाश आर्य, सतीश चड्ढा, अर्जुनदेव चड्ढा, रामप्रसाद याज्ञिक, शिवकुमार मदान, एस.पी. सिंह, हर्षप्रिय आर्य, श्रीमती विभा आर्या ने दीप प्रज्ज्वलन कर ईश्वर स्तुति, प्रार्थना, उपासना के मंत्रोच्चार के साथ किया। इस अवसर पर आर्य भजनोपदेशिका श्रीमती सुदेश आर्या ने प्रभु भक्ति का भजन प्रस्तुत किया।

दीप प्रज्ज्वलन के उपरान्त आर्य समाज कीर्तिनगर के मंत्री सतीश चड्ढा ने अतिथियों का परिचय दिया तथा पदाधिकारियों ने अतिथियों का केसरिया पटका पहनाकर स्वागत किया।

सम्मेलन में कार्यक्रम की अध्यक्षता करते हुए राजीव आर्य महामंत्री आर्य केन्द्रीय सभा दिल्ली ने कहा कि जन्मपत्रिका के स्थान पर केवल गुण, कर्म और स्वभाव को मिलाना चाहिए। ऋषि की इसी विचारधारा का पोषण करना हमारा उत्तरदायित्व है। प्राचीनकाल में इसी कार्य को पुरोहित एवं आचार्य करते रहे हैं। यह समाजसेवा का सात्विक कार्य है। आर्य समाज का यह कदम प्रशंसनीय है। हमारा उद्देश्य आर्य विचारों के परिवारों को जोड़ना है। इसके लिए आयोजकों को बहुत बधाइयां। इस कार्यक्रम का और अधिक विस्तार होना चाहिए।

इस अवसर पर परिचय सम्मेलन में विशिष्ट अतिथि शिवकुमार मदान, उपप्रधान दिल्ली आर्य प्रतिनिधि सभा ने कहा कि आधुनिक युग में युवक-युवतियों के बीच बढ़ते ईगो ने विवाह संस्था पर प्रहार किया है इसका एकमात्र समाधान एक समान विचारवालों के बीच विवाह सम्बंधों का जुड़ना है। इसके लिए ही आर्य समाज ने इन सम्मेलनों को प्रारम्भ किया है।

अमरोहा उत्तरप्रदेश से पधारे आर्यवर्त केसरी के प्रधान सम्पादक आर्य विद्वान डॉ. अशोक आर्य ने कहा कि महर्षि दयानन्द के कृण्वन्तो विश्वमार्यम् के मिशन में यह एक बड़ा कार्य है। विवाह संस्कार द्वारा आर्य परिवार बनाने की अनूठी पहल है। इसके लिए इसके राष्ट्रीय संयोजक अर्जुनदेव चड्ढा बहुत धन्यवाद के पात्र हैं। मुझसे अनेक लोग इस संदर्भ में जानकारियां प्राप्त करते हैं तथा अपने बच्चों के रिश्ते की सलाह मांगते हैं। श्री चड्ढा के नेतृत्व में परिचय सम्मेलन सफलता के अपने उद्देश्यों की प्राप्ति की ओर बढ़ रहे हैं। इसके लिए इनको बहुत बधाइयां।

इस अवसर पर कार्यक्रम स्थल पर अमरोहा से पधारे डॉ. अशोक आर्य के समाचार पत्र आर्यवर्त केसरी के विशेषांक का उपस्थित अतिथियों द्वारा विमोचन किया गया।

सम्मेलन की महिला संयोजिका श्रीमती विभा आर्य ने कहा कि हमारी प्राथमिकता आर्य परिवारों को जोड़ने की है जिससे वैदिक परम्परा आगे बढ़ती रहे। आर्य संस्कार में पले-बढ़े युवक-युवतियों के लिए दहेज सर्वथा त्याज्य है।

समाजसेवी प्रेम अरोड़ा ने कहा कि आर्य परिवार परिचय सम्मेलन के माध्यम से एक ही छत के नीचे कई रिश्ते देखने व करने को मिलते हैं, आर्य युवक-युवतियों को संस्कारवान जीवन साथी चयन का यह अच्छा प्रयास है।

कार्यक्रम के संयोजक अर्जुनदेव चड्ढा ने बताया कि इस सम्मेलन में जिन युवक एवं युवतियों का पंजीकरण किया गया था उनका मय फोटो बायोडाटा विवरणिका पुस्तिका में प्रकाशित किया गया था। यह विवरणिका पुस्तिका सम्मेलन स्थल पर सभी पंजीकृत युवक-युवतियों को नि:शुल्क दी गई। कार्यक्रम स्थल पर ही 22 युवक और 18 युवतियों ने तत्काल पंजीयन कराया।

कार्यक्रम में दिल्ली के संयोजक एस. पी. सिंह ने बताया कि कार्यक्रम स्थल पर पूछताछ, तत्काल रजिस्ट्रेशन विवरणिका पुस्तक वितरण, युवक-युवती बैज वितरण आदि के पृथक-पृथक काउण्टर लगाये गए थे।

काउण्टर पर पूरी जिम्मेदारी महिला संयोजिका श्रीमती विभा आर्या व श्रीमती रश्मि वर्मा के साथ हविषा आर्या, पर्णिका आर्या, श्रीमती सुषमा सेठ, कविता आर्या, अशोक आर्य (दिल्ली सभा), विश्वामित्र मक्कड़, संदीप कुमार, रविप्रकाश आर्य, सुभाष चावला ने संभाल रखी थी।

उन्होंने बताया कि सम्मेलन स्थल पर युवक एवं युवती परिवारों को अलग-अलग रंगों के बैज दिये गये तथा उम्मीदवार युवक-युवतियों को सफेद रंग के बैज दिये गये थे जिसमें उनकी अलग पहचान हो सके। कुछ अभिभावकों ने अपने पुत्र-पुत्रियों का बायोडेटा मंच पर आकर बताया। युवक-युवतियों ने मंच पर आकर आत्मविश्वास के साथ परिचय दिया।

सम्मेलन स्थल पर 32 परिवारों ने आपसी बातचीत कर रिश्ते करने की बात को आगे बढ़ाया। जिसमें आर्य समाज कीर्तिनगर के प्रधान ओमप्रकाश आर्य, मंत्री सतीश चड्ढा, शिवकुमार मदान, वेदप्रकाश कथूरिया, रवि चड्ढा ने उपस्थित परिवारों को आपसी मेलमिलाप करने में पूर्ण सहयोग प्रदान किया।

सम्मेलन में कार्यक्रम स्थल पर प्रात: चाय, नाश्ता तथा भोजन की आर्य समाज कीर्ति नगर द्वारा नि:शुल्क व्यवस्था की गई थी। सम्मेलन का संचालन राष्ट्रीय संयोजक अर्जुनदेव चड्ढा और महिला संयोजक विभा आर्या, दिल्ली के संयोजक एस.पी.सिंह तथा आर्य समाज कीर्ति नगर के मंत्री सतीश चड्ढा एवं कोटा के रामप्रसाद याज्ञिक द्वारा किया गया।

आर्य समाज कीर्ति नगर दिल्ली के प्रधान ओमप्रकाश आर्य ने कहा कि हमें इस बात की प्रसन्नता है कि यह कार्यक्रम आर्य समाज कीर्ति नगर में संपन्न हुआ। मंत्री सतीश चड्ढा ने सभी आगन्तुक अतिथियों, युवक-युवतियों अभिभावकों का धन्यवाद ज्ञापित किया।

- अर्जुनदेव चड्ढा, राष्ट्रीय संयोजक

श्री अजय सहगल, राजीव आर्य, प्रेम अरोड़ा, रवि गुप्ता, सतपाल भरारा, एवं अन्य पदाधिकारियों ने दीप प्रज्जवलन करके कार्यक्रम का शुभारम्भ

परिचय विवरणिका का विमोचन करते महाशय धर्मपाल जी एवं सम्मेलन में अपना परिचय देते प्रतिभागी युवक-युवतियां एवं उनके माता-पिता

प्रतिभागी युवक-युवतियों का आर्यसमाज कीर्ति नगर के अधिकारियों के साथ ग्रुप फोटो एवं आपसी मेल-मिलाप करते युवक-युवतियों परिजन

महाभारत विश्वकोश निर्माण हेतु कार्यशाला सम्पन्न

'एक समय था जब विदेशी आक्रमणकारियों द्वारा, भारत की मूल संस्कृति, सभ्यता जिसका संवाहक हिन्दुओं को कहा जाता है पूर्णतया दबा दिया गया था। बाद में स्वामी दयानन्द, स्वामी विवेकानन्द, हेडगेवार आदि विभूतियों ने हिन्दू धर्म के उत्थान के लिए कार्य किया, और स्वामी श्रद्धानन्द द्वारा गुरुकुल की स्थापना करना मील का पत्थर साबित हुई।' उपरोक्त विचार गुरुकुल कांगडी विश्वविद्यालय के अंग्रेजी विभाग द्वारा आयोजित "महाभारत विश्वकोश" के निर्माण हेतु सात दिवसीय कार्यशाला में मुख्य अतिथि के रूप में जाने माने अंग्रेजी साहित्यकार प्रो० कपिल कपूर ने व्यक्त किए।

कार्यक्रम की अध्यक्षता करते हुए कुलपति डॉ० सुरेन्द्र कुमार ने कहा कि हमें प्राचीन और अर्वाचीन के तालमेल से चलना है। उन्होंने कहा कि 1902 में विषम परिस्थितियों आर्य समाज की इस संस्था की एक स्थापना एक क्रान्तिकारी कदम था। उन्होंने कहा कि मैक्समूलर ने वेदों का भाष्य अवश्य किया लेकिन उनकी मूल भावना भारतीयों को निकृष्ट साबित कर ईसाई मिशनरियों को बढ़ावा देने की थी। इसी प्रकार मैकाले ने हमारी आधारभूत बातों को पाठ्यक्रम से हटा दिया और केवल अक्षर ज्ञान देकर पाश्चात्य सभ्यता को थोपने का काम किया। इसी तारतम्य में भारतीय विद्वान् जो आक्सफोर्ड आदि से पढ़कर आए, वे हमारे गौरवशाली इतिहास को भूलकर अंग्रेजों द्वारा प्रतिष्ठित मूल्यों को ही बताते रहे हैं और हमारी पीढ़ी भारतीय संस्कृति के वैदिक एवं मानव मूल्यों से मरहूम हो गई। अंग्रेजों ने भारत में आर्य-द्रविड़ उत्तर-दक्षिण, जातिगत भेदों को पैदा किया जबकि भारत में कभी इस प्रकार की असमानताएं नहीं थी। उन्होंने कहा कि गुरुकुल में महाभारत के विश्वकोश के निर्माण से सम्पूर्ण जगत को हमारी मान्यताओं का पता चलेगा। कुलपति ने आयोजकों से यह भी कहा कि वे महाभारत की मौलिकता को बनाए रखें। क्योंकि उसमें कुछ ऐसे प्रक्षेपक भी हैं जो गलत संदेश देते हैं। उन्होंने बताया कि मूल जयकाव्य जो कि बाद में महाभारत नाम से अभिहित हुआ उसमें मात्र 6000 श्लोक थे, जबकि सौदी, वैशम्पायन आदि द्वारा लिखे जाने पर वह एक लाख श्लोकों का महाभारत बन गया उन्होंने उन कथाओं से भी बचने के लिए कहा जो कि कृष्ण के योगी रूप को विकृत कर देती है।

कुलपति ने कहा कि युद्ध से मूल्यों में परिवर्तन हो और इसी कारण वैदिक धर्म में विघटन हुआ और यह स्थिति रामायण, महाभारत तथा मनुस्मृति में प्रक्षेपकों द्वारा हुई। कई चीजें महाकाव्यों को चमत्कृत बनाने के लिए जोड़ दी गई। उन्होंने कहा कि महाभारत में कहीं भी राधा नाम का प्रसंग नहीं मिलता लेकिन आज वही नाम कृष्ण के साथ जुड़ा हुआ है। कार्यशला की रूप रेखा संयोजक प्रो० श्रवण शर्मा ने प्रस्तुत की।

कार्यक्रम को एन०सी०आर०टी० की डा० नीलिमा शर्मा, डा० नीलम भट्ट प्रो० ज्ञान प्रकाश शास्त्री, डा० हिमल आदि ने भी संबोधित किया।

- डॉ. प्रदीप कुमार जोशी, पी.आर.ओ.

आर्यजन ध्यान दें

समस्त आर्य परिवारों से निवेदन है कि यदि आपके कोई सम्बन्धी/रिश्तेदार/परिचित या आर्य विचारधारा से प्रेरित कोई व्यक्ति भारत के अन्दमान-निकोबार, लक्ष्यद्वीप या गोवा में रहते हैं अथवा नौकरी करते हैं तो कृपया उनका नाम, पता, दूरभाष तथा ईमेल हमें भेजने की कृपा करें ताकि उनसे सम्पर्क करके यहां आर्यसमाज की स्थापना का प्रयास किया जा सके। *-मन्त्री, सार्वदेशिक सभा*

ईमेल : aryasabha@yahoo.com

आवश्यकता है

दिल्ली आर्य प्रतिनिधि सभा को विभिन्न विषयों पर लेख लिखने एवं सम्पादन कार्य में रूचि रखने वाले आर्य युवा लेखकों की आवश्यकता है। गुरुकुल से शिक्षा प्राप्त विद्वानों को प्राथमिकता दी जाएगी। इच्छुक महानुभाव अपने बायोडाटा ईमेल/डाक द्वारा भेजें।

महामन्त्री, दिल्ली आर्य प्रतिनिधि सभा
15- हनुमान रोड, नई दिल्ली-110001
ईमेल : aryasabha@yahoo.com

ओ३म्

भारत में फैले सम्प्रदायों की निष्पक्ष व तार्किक समीक्षा के लिए उत्तम कागज़, मनमोहक जिल्द एवं सुन्दर आकर्षक मुद्रण (द्वितीय संस्करण से मिलान कर शुद्ध प्रामाणिक संस्करण)

सत्य के प्रचारार्थ

सत्यार्थ प्रकाश

सत्य के प्रचारार्थ

● प्रचार संस्करण (अजिल्द) 23×36÷16	मुद्रित मूल्य 50 रु.	प्रचारार्थ 30 रु.	प्रचारार्थ मूल्य पर कोई कमीशन नहीं
● विशेष संस्करण (सजिल्द) 23×36÷16	मुद्रित मूल्य 80 रु.	प्रचारार्थ 50 रु.	
● स्थूलाक्षर सजिल्द 20×30÷8	मुद्रित मूल्य 150 रु.		प्रत्येक प्रति पर 20% कमीशन

10 या 10 से अधिक प्रतियाँ लेने पर विशेष अतिरिक्त कमीशन

कृपया, एक बार सेवा का अवसर अवश्य दें और महर्षि दयानन्द की अनुपम कृति **सत्यार्थ प्रकाश** के प्रचार प्रसार में सहभागी बनें

आर्ष साहित्य प्रचार ट्रस्ट
427, मन्दिर वाली गली, नया बांस, दिल्ली-6
Ph. :011-43781191, 09650622778
E-mail : aspt.india@gmail.com

सार्वदेशिक आर्य प्रतिनिधि सभा दिल्ली
अन्तर्राष्ट्रीय आर्य महासम्मेलन 2014 : सिंगापुर-थाईलैंड
आवेदन-पत्र

श्री अग्रवाल सुरेशचन्द्र आर्य
यात्रा संयोजक-अन्तर्राष्ट्रीय आर्य महासम्मेलन - 2014
12, रॉयल क्रीसैन्ट, थलतेज, अहमदाबाद -380059
मो. 9824072509, निवास : 079-26858338

महोदय,

मैं अन्तर्राष्ट्रीय आर्य महासम्मेलन 2014 में भाग लेने जाना चाहता/चाहती हूँ। इस सम्बन्ध में आपके द्वारा प्रेषित जानकारी को मैंने अच्छी तरह पढ़ लिया है तथा उसमें दी गई सभी बातें मुझे स्वीकार हैं। मेरी अन्य जानकारी निम्न प्रकार है:-

नाम:.....पिता/पति का नाम: .....
आयु: ..... जन्मतिथि .....व्यवसाय .....
स्थाई पता :.....
.....
टेलीफोन व मोबाईल ..... ई.मेल: .....
मैं आर्यसमाज ..... का/की सदस्य हूँ।
मेरा पासपोर्ट .....तक के लिए वैध है।
मेरा पासपोट नम्बर .....है।

मैं सम्मेलन के अतिरिक्त स्टार क्रूज का भी भ्रमण करना चाहता/चाहती हूँ। अत: मैं अग्रिम धनराशि के रूप में 65,000/-रु. का बैंक ड्राफ्ट साथ में भेज रहा/रही हूँ। कृपया मुझे शीघ्र ही वीजा फार्म तथा अन्य जानकारी भेज दें। मैं 31/08/2014 से पूर्व यात्रा-व्यय की शेष राशि अवश्य भिजवा दूँगा/दूँगी। **अथवा**

मैं स्टार क्रूज में सम्मिलित नहीं होना चाहता/चाहती हूँ। अत: मैं अग्रिम धनराशि के रूप में 55,000/- रु. का बैंक ड्राफ्ट साथ में भेज रहा/रही हूँ। कृपया मुझे शीघ्र ही वीजा फार्म तथा अन्य जानकारी भेज दें। मैं 31/08/2014 से पूर्व यात्रा-व्यय की शेष राशि अवश्य भिजवा दूँगा/दूँगी।

मेरे द्वारा दी गई उपरोक्त जानकारी पूर्ण रूप से सत्य है।

दिनांक : ..... भवदीय/भवदीया

आवेदन पत्र **www.thearyasamaj.org** से भी डाउनलोड किया जा सकता है।

निर्वाचन समाचार

स्त्री आर्यसमाज विदिशा (म.प्र.)
प्रधान : श्रीमती राजेश श्रीवास्तव
मन्त्री : श्रीमती वन्दना आर्या
कोषाध्यक्ष : श्रीमती विभा आर्या

आर्यसमाज खेड़ा अफगान सहारनपुर
प्रधान : श्री आदित्य प्रकाश गुप्त
मन्त्री : श्री अमित कुमार आर्य
कोषाध्यक्ष : श्री यशपाल गुप्त

समस्त विद्यालयों एवं विद्यार्थियों को वार्षिक परीक्षा के उत्कृष्ट परिणामों हेतु हार्दिक शुभकामनाएं

आर्य विद्या परिषद् दिल्ली द्वारा
समस्त विद्यालयों/आर्य शिक्षण संस्थाओं हेतु प्रकाशित

नैतिक शिक्षा की पुस्तकें

नर्सरी से 12वीं कक्षा तक

आकर्षक छूट 25%

बेहतरीन कागज पर आकर्षक छपाई में तैयार कराई गई नैतिक शिक्षा की पुस्तकें छात्रों के नैतिक, बौद्धिक, आध्यात्मिक ज्ञान तथा राष्ट्रीय भावना जागृत करने वाली हैं। आर्य विद्या परिषद् द्वारा प्रकाशित कराई गई नैतिक शिक्षा की ये पुस्तकें दिल्ली के समस्त विद्यालयों/शिक्षण संस्थाओं के साथ-साथ दिल्ली से बाहर अन्य प्रदेशों के विद्यालयों के पाठ्यक्रम में भी नर्सरी से कक्षा 12वीं तक लागू हैं। अपने विद्यालय/शिक्षण संस्था के लिए आवश्यकतानुसार मंगवाने के लिए सभा कार्यालय से सम्पर्क करें।

दिल्ली आर्य प्रतिनिधि सभा, 15, हनुमान रोड, नई दिल्ली- 110001
☎ : 23360150; Email : aryasabha@yahoo.com

पृष्ठ 3 का शेष

पोषण, लाड़-प्यार प्राकृतिक है, जो प्रकृति कराती है किन्तु मनुष्य अहंकार वश अपने को प्रेम करने वाला समझता है। यह प्रेम सामाजिक है। इसीलिए तो अपने-अपने उद्देश्य की पूर्ति के बाद यह प्रेम बिखर जाता है। किन्तु जो मनुष्य अपने दायित्वों को पूरा करते हुए परमात्मा से प्रेम करता है, यह अलौकिक एवं अमृत सुख प्राप्त करने वाला प्रेम है। यह प्रेम, धन, यौवन, स्वार्थ, ज्ञान, तप, इच्छा कामना से परे है।

मनुष्य का जीवन सूर्य की तरह गतिमान है। सूर्योदय उसका जन्म है, दोपहर, जवानी और सांझ वृद्धावस्था है और सभी में जीवन की कहानी के समापन का प्रतीक है, जीवन मृत्यु दोनों सत्य हैं। यह जीवन का परम सत्य है। जन्म से मृत्यु तक सुख अस्थायी नहीं रहता। किन्तु एक बात स्मरण रखनी चाहिए कि वृद्धावस्था तो जीवन का सुनहरा अध्याय है जिसने जीवन जीना सीखा है, उसके लिए वृद्धावस्था अनुभवों से भरा जीवन होता है। जवानी में दूसरों के लिए जीता है और वृद्धावस्था में अपने कल्याण के लिये जीता है। वृद्धावस्था जीवन का महत्त्वपूर्ण पड़ाव है। कहा भी गया है, जवानी में सुख से जियो और वृद्धावस्था में शान्ति से जियो। मनुष्य जीवन भर शन्ति की खोज में रहता है, उसका परिणाम वृद्धावस्था में प्राप्त होता है। ज्ञान भक्ति और कर्म के विविध मार्ग यदि न बने तो शान्ति प्राप्ति के लिए एक मार्ग परमात्मा की शरण में जाने का मार्ग भी है। यह मार्ग अहम् भाव को तिरोहित करने का है।

महर्षि दयानन्द सरस्वती जी ने स्वयं जब ईश्वर को प्राप्त किया अर्थात् अनुभूति प्राप्त की तो वह ऋषि कहलाये। तभी तो उन्होंने संसार के प्रपन्चों से हटाने की शिक्षा कदम-कदम पर दी जाती है। उन्होंने मनुष्य को ईश्वर की ओर मोड़ने के लिए एक अद्‌भुत ज्ञानवर्धक कल्याणकारी ग्रन्थ सत्यार्थ प्रकाश लिखा और उसमें 11 सम्मुलास केवल मनुष्यपन से देवत्व की ओर ले जाने के लिए लिखे हैं। आश्चर्य होता है कि, युगों बाद एक देवता ने ईश्वरीय परम्परा को स्थापित करने लिए कितने कष्ट सहे। सम्पूर्ण संसार एक तरफ और ईश्वर भक्त ऋषि एक तरफ थे। उन्होंने कहा जो हमें दीखता है, वह असत्य है और जो नहीं दीखता वह सत्य है। जो चलायमान है व अस्थिर है, परिवर्तनशील है, वह दिखत ही भर है, वास्तव में वह अपरिवर्तनशील तत्व के ही आधार पर टिका हुआ है। अचल स्थिर अपरिवर्तन शील तत्व न हो परिवर्तन हो ही नहीं सकता है। हर गति अगतिशीलता के कारण टिकी हुई है। इसलिए दृश्य परिवर्तनशील और अदृश्य परिवर्तनशील है। जैसे आत्मा अदृश्य है तो शरीर दृश्य है, इसी प्रकार संसार के प्रत्येक पदार्थ दृश्य परिवर्तनशील हैं और उनका आधार परमात्मा के गुण अपरिवर्तनशील हैं।

- उम्मेद सिंह विशारद
गढ़ निवास, मोहकमपुर
देहरादून (उत्तराखण्ड)

प्रान्तीय आर्य महिला सभा के तत्त्वावधान में
आर्यसमाज विकासपुरी डी ब्लाक में
हरियाली तीज का आयोजन
दिनांक 4 अगस्त, 2014

यज्ञ : 12:30 बजे
संगीत : दोपहर 2 से 4:30 बजे
समस्त आर्य महिलाएं पधारकर कार्यक्रम की शोभा बढ़ाएं।

- प्रकाश कथूरिया, सभा प्रधान

दिल्ली आर्य प्रतिनिधि सभा द्वारा जम्मू-कश्मीर आर्य प्रतिनिधि सभा के सहयोग से
सार्वजनिक स्थलों पर साहित्य प्रचार

श्रीनगर पुस्तक मेला

स्थान : प्रदर्शनी मैदान, कश्मीर हाट, श्रीनगर (ज.क.)

23 से 31 अगस्त, 2014 : प्रात : 11 बजे

आर्यजन अधिकाधिक संख्या में पहुंचकर कार्यकर्त्ताओं का उत्साहवर्धन करें तथा अधिकाधिक संख्या में जन सामान्य को पुस्तक मेले में सभा के साहित्य प्रचार स्टाल पर पहुंचने के लिए प्रेरित करें।

-: निवेदक :-

विनय आर्य, महामन्त्री (दिल्ली सभा) ***भारतभूषण आर्य, प्रधान, ज.क. सभा***

दिल्ली आर्य प्रतिनिधि सभा की ओर से आर्यसमाजों के लिए उपदेशक/भजनोपदेशक सेवा आर्यसमाजें सभा की इस सेवा लाभ से उठाएं

दिल्ली की समस्त आर्यसमाजों की सूचनार्थ है कि दिल्ली आर्य प्रतिनिधि सभा के वेद प्रचार विभाग की ओर से दिल्ली की समस्त आर्यसमाजों के लिए उपदेशक/भजनोपदेशक भेजने का कार्य नियमित रूप से होता है। ऐसी समस्त आर्यसमाजें जहां उपदेशक/भजनोपदेशक नियमित रूप से नहीं आते हैं और वे विद्वानों को आमन्त्रित करना चाहते हैं। उनसे निवेदन है कि वे अपने साप्ताहिक सत्संगों पर उपदेशक आदि बुलाने के लिए सभा के अन्तर्गत संचालित वेद प्रचार विभाग के **सहायक अधिष्ठाता आचार्य ऋषिदेव आर्य जी से मो. 9540040388** पर सम्पर्क करें। आचार्य जी द्वारा आपकी आर्यसमाज/संस्थान के लिए आगामी छह मास के साप्ताहिक सत्संग निर्धारित किए जा सकेंगे।

-विनय आर्य, महामन्त्री (9958174441)

प्रथम पृष्ठ का शेष

बुद्धिमान, तार्किक, वैज्ञानिक सोच रख सकता है तथा समाज उत्थान व राष्ट्र-उद्धार की बातें कर सकता है।

भारतीय संस्कृति, इतिहास व वैदिक साहित्य के उलटे अर्थ कर उन पर कुठाराघात करने वालों को उन्होंने प्रभावी चुनौती देकर एक गर्व करने वाली दिशा दी। स्वामी दयानन्द ने डंके की चोट से कहा कि देश के पतन का मुख्य कारण वेदों (वैदिक शिक्षा) को भुला देना है। वेद सब सत्य विद्याओं की पुस्तक है, वे मानव जाति की अमूल्य धरोहर है तथा उन्हें पढ़ने का अधिकार सब जाति-धर्मों-देशों के लोगों को है। आर्य इस देश के मूल निवासी हैं आर्य-आक्रमण तथा आर्य-द्रविड़ भेद जैसे मुद्दे कृत्रिम, झूठे व देश को बाँटने वाले हैं। भारतीय सभ्यता व संस्कृति करोड़ों वर्ष पुरानी है तथा यह देश कला, कौशल, विज्ञान में दुनिया का सिरमौर रहा।

स्वामी दयानन्द ऐसे महापुरुष हुए जिन्होंने कभी-भी, कहीं-भी असत्य से समझौता नहीं किया। उन्होंने प्रतिपादन किया कि सभी मतांगे सम्प्रदायों प्रचलित-

संसद में गुंजाया महर्षि ....

धर्मों के बीच में मूल तत्व एक ही है जो सभी मतों-सम्प्रदायों में अविरुद्ध (Common) है वही सत्य धर्म के मूल तत्त्व है।

स्वामी दयानन्द पहले राष्ट्र चिंतक थे, जिन्होंने देश की एकता समृद्धि व गौरव के लिए एक भाषा (हिन्दी), एक धार्मिक ग्रन्थ (वेद), एक इष्ट देव (ईश्वर) एक जाति (मानव) तथा एक उपासना पद्धति का पुरजोर प्रतिपादन किया। उसको महात्मा गांधी, रविन्द्रनाथ टैगोर, लाला लाजपत राय, स्वामी श्रद्धानन्द, अरविन्द घोष आदि महापुरुषों ने अपना गुरु माना।

यह दुर्भाग्य की बात है कि उनके अप्रतिम योगदान को इस देश के इतिहासकारों व तात्कालिक भारत सरकार ने समुचित मान-सम्मान नहीं दिया।

अध्यक्ष महोदय! आपके माध्यम से मैं सरकार से मांग करता हूँ कि स्वामी दयानन्द सरस्वती जैसे अलौकिक व अद्वितीय व्यक्तित्व को सम्यक मान व सम्मान दिया जाये और उनके असाधारण योगदान की - विभिन्न प्रकार से सराहना की जाये नहीं तो आने वाली पीढ़ियाँ हमें माफ नहीं करेंगी।

धन्यवाद, अध्यक्ष महोदय।

समयाभाव से निम्न वाक्य भाषण में बोले नहीं जा सके

"ऐसा योगी, ब्रह्मचारी, सत्य का पुजारी, वेदों का विद्वान्, समाज सुधारक, दलित उद्धारक, राष्ट्र-उन्नायक ऋषि पिछले सैकड़ों नहीं, हजारों वर्षों में पैदा नहीं हुआ।
तुम्हारी सूरत से नहीं मिलती किसी और की सूरत।
हम जहाँ में तुम्हारी तस्वीर लिये फिरते हैं।।"

गुरुकुल कांगड़ी फार्मेसी के रिटेल केन्द्र

गुरुकुल कांगड़ी फार्मेसी के उत्पादों को जन सामान्य तक पहुंचाने की दृष्टि से दिल्ली आर्य प्रतिनिधि सभा ने आर्यसमाजों में रिटेल केन्द्र स्थापित करने का प्रस्ताव आर्य विद्या सभा गरुकुल कांगड़ी को दिया था जो कि स्वीकृत हो गया है। इस हेतु जो आर्यसमाजें/ आर्य संस्थान गुरुकल कांगड़ी फार्मेसी के उत्पादों के लिए रिटेल शॉप लेना चाहें वे अपने आवेदन निम्न पते पर भेजें। आपका आवेदन प्राप्त होने पर नियम व शर्ते आदि से आपको अवगत करा दिया जाएगा। हमारा उद्देश्य आर्यसमाज के इस ऐतिहासिक केन्द्र को निरन्तर उन्नति की ओर अग्रसारित करना है।

- महामन्त्री, दिल्ली आर्य प्रतिनिधि सभा, 15 हनुमान रोड, नई दिल्ली-1

दिल्ली आर्य प्रतिनिधि सभा - हैल्प लाइन
समस्या समाधान/जानकारी हेतु किससे सम्पर्क करें?

दिल्ली आर्य प्रतिनिधि सभा-15 हनुमान रोड, नई दिल्ली ने दिल्ली की आर्यसमाजों/आर्य शिक्षण संस्थाओं/आर्यजनों तथा आर्यसन्देश के माननीय सदस्यों के लिए हैल्पलाइन सुविधा आरम्भ की है। आप अपनी समस्या/सम्बन्धित जानकारी के लिए दोपहर 12:30 से सायं 7:30 बजे तक किसी भी कार्य दिवस में निम्न महानुभावों से सम्पर्क कर सकते हैं। यदि आपकी समस्या सुनी नहीं जाती है तो कृपया अपनी समस्या तथा किससे सम्पर्क किया गया, उसका विवरण aryasabha@yahoo.com पर ईमेल करें-

वैदिक प्रकाशन/विक्रय विभाग -	श्री विजय आर्य (9540040339)
आर्यसन्देश न मिलने पर -	श्री एस. पी. सिंह (9540040324)
भजनोपदेशक/उपदेशक सेवा -	श्री ऋषिदेव आर्य (9540040388)
मुकदमा/कानूनी सहायता -	श्री सुरेशचन्द्र गुप्ता (9212082892)
वैवाहिक परिचय सम्मेलन आयोजन हेतु-	श्री अर्जुन देव चड्ढा (941418728)
वैवाहिक परिचय आवेदन/जानकारी हेतु -	श्री एस. पी. सिंह (9540040324)
दशांश-वेद प्रचार/प्रशासनिक कार्य -	श्री अशोक कुमार (9540040322)

- विनय आर्य, महातन्त्री (9958174441)

साप्ताहिक आर्य सन्देश में छपे लेखों तथा विचारों से सम्पादक मंडल अथवा दिल्ली आर्य प्रतिनिधि सभा का सैद्धान्तिक मतैक्य होना आवश्यक नहीं है। - सम्पादक

साप्ताहिक आर्य सन्देश

सोमवार 21 जुलाई, 2014 से रविवार 27 जुलाई, 2014

दिल्ली आर्य प्रतिनिधि सभा, 15–हनुमान् रोड, नई दिल्ली–110001

दिल्ली पोस्टल रजि.नं0 डी.एल.(एन.डी.)–11/6071/2012–13–14

नई दिल्ली पी.एस.ओ. में पोस्ट करने का दिनांक 24 /25 जुलाई, 2014

पूर्व भुगतान किए बिना भेजने का लाइसेन्स नं0 यू0(सी0) 139/2012–14

आर. एन. नं. 32387/77 प्रकाशन तिथि: बुधवार 23 जुलाई, 2014

दिल्ली सभा के वैदिक प्रकाशन विभाग में उपलब्ध

श्रावणी पर्व पर वितरणार्थ लघु साहित्य

आपको विदित ही है कि आर्यसमाज द्वारा प्रतिवर्ष रक्षाबन्धन से जन्माष्टमी तक श्रावणी पर्व आयोजित किया जाता है। श्रावणी पर्व विशेष तौर पर स्वाध्याय के पर्व के रूप में जाना जाता है।

इस वर्ष **रक्षा बन्धन (रविवार) 10 अगस्त, 2014** को तथा **श्रीकृष्ण जन्माष्टमी (सोमवार) 18 अगस्त, 2014** को है। दोनों पर्वों के बीच का सप्ताह आर्यसमाजों द्वारा वेद प्रचार समारोह के रूप में मनाया जाता है।

सभा की ओर से जन साधारण को आर्यसमाज के कार्य, उद्देश्य, इतिहास, मान्यताएं, धार्मिक विश्वास, नियम, महर्षि दयानन्द, वेद, एवं वैदिक संस्कृति के ज्ञान को सरलता–सुगमता से पहुंचाने के लिए कुछ विशेष सामग्री तैयार की है जो कि इस अवसर पर विशेष रूप से युवाओं तथा नव आगन्तुकों को बांटी जा सकती है। इनमें –

एक निमन्त्रण : जन साधारण को आर्यसमाज की विशेषताएं? इतिहास एवं वर्तमान बताते हुए आर्यसमाज से जुड़ने की प्रेरणा हैं (**मूल्य 10/–**)

मानव निर्माण के स्वर्णिम सूत्र : आर्य समाज के मन्तव्यों का ज्ञान: (**मूल्य 3/–**)

लघु सत्यार्थ प्रकाश : बच्चों हेतु सरल भाषा में सत्यार्थ प्रकाश (**मूल्य 10/–**)।

नियमानुसार छूट उपलब्ध

अधिक जानकारी के लिए श्री विजय आर्य 9540040339 से सम्पर्क करें।

प्रतिष्ठा में,

गुरुकुल कांगड़ी फार्मेसी के उत्पादों पर

30% की विशेष छूट

आंवला कैंडी (500 ग्राम) ~~160/-~~	आंवला कैंडी (1किलो) ~~294/-~~	च्यवनप्राश स्पेशल (1किलो) ~~286/-~~
110/–रु.	210/–रु.	200/–रु.

इसके अलावा सभी उत्पादों पर 10% की छूट। प्राप्त करने/अधिक जानकारी के लिए 9540040339 पर श्री विजय आर्य जी से सम्पर्क करें।– महामन्त्री

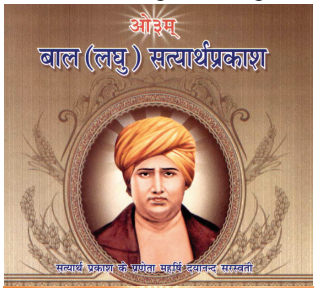

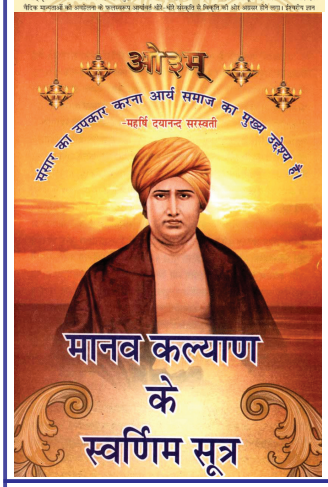

सम्पादक, मुद्रक एवं प्रकाशक ब्र0 राजसिंह आर्य ने दिल्ली आर्य प्रतिनिधि सभा के लिए हरि हर प्रैस, ए–29/2, नरायणा औद्यो. क्षेत्र–1, नई दिल्ली–28 से छपवाकर दिल्ली आर्य प्रतिनिधि सभा, 15–हनुमान रोड, नई दिल्ली–1; टैलीफैक्स : 23360150; 23365959; IVRS : 011-23488888 E-mail : aryasabha@yahoo.com से प्रकाशित किया।

सम्पादक : ब्र0 राजसिंह आर्य सह सम्पादक : विनय आर्य व्यवस्थापक : शिवकुमार मदान सह व्यवस्थापक : आर्य डॉ0 ओमप्रकाश भटनागर, एस. पी. सिंह